शरारती बिल्लू की होली

(कहानी)

3

जब भी होली आती है, बिल्लू को अपने पुराने दिन याद आ जाते हैं। उस समय होली क्या आती थी, बिल्लू को तो जैसे लोगों को परेशान करने का सुनहरा अवसर मिल जाता था। सारा दिन हाथ में रंगभरी पिचकारी लिये शिकार की तलाश में रहता था।

एक बार होली का ही अवसर था। दीनू काका हाथ में लाठी लिये धीरे-धीरे चलते हुए अभी गली के मोड़ तक ही पहुँचे थे कि ठंडे पानी की बौछार सीधे उनके मुँह पर पड़ी। अचानक हुए हमले से वह सँभल नहीं पाए और पीठ के बल ज़मीन पर जा गिरे।

"हा..... हा..... हा..... क्यों काका कैसी रही?" यह आवाज़

दीनू काका के लिए नई नहीं थी। यह और कोई नहीं, उनकी गली का सबसे शैतान बच्चा बिल्लू था, जो पूरे मोहल्ले के लिए परेशानी का कारण बना हुआ था।

"ठहर बदमाश, अभी तुझे सबक़ सिखाता हूँ।" कहते हुए दीनू काका ने उठने की कोशिश की, लेकिन कमर के दर्द से वह कराह उठे और बिल्लू नौ-दो-ग्यारह हो गया।

दीनू काका ने फ़ैसला ले लिया था कि वह बिल्लू की शिकायत मोहल्ला सुधार समिति में करेंगे। कुछ ही देर में वह समिति के ऑफिस में बैठे हुए अधिकारियों को घटना का ब्यौरा दे रहे थे, "अरे साहब, नाक में दम कर रखा है इस लड़के ने।" दीनू काका ने कराहते हुए कहा।

"आप सही कहते हो काका, अब पानी सिर से ऊपर जा चुका है। हमें बिल्लू की शिकायत उसके पिताजी से करनी ही पड़ेगी।" समिति के अध्यक्ष चोपड़ा जी ने सहमति जताते हुए कहा।

"अभी तीन-चार दिन पहले ही उस लड़के ने मेरे बेटे की आँख पर गुब्बारा फेंककर मारा था। बेचारे की आँख बुरी तरह से लाल होकर सूज गई थी। मैं तो तभी से आपके पास आने के लिए सोच रहा था। आज जब समय मिला तो अपनी शिकायत लेकर आया हूँ।" रामनाथ जी, जो समिति के एक वरिष्ठ सदस्य थे, बोले।

"ऐसा करते हैं, सब लोग मिलकर अभी बिल्लू के पिता के पास अपनी-अपनी शिकायतें लेकर चलते हैं, वे ही कोई सही क़दम उठाएँगे।" दीनू काका ने सुझाव दिया।

"लेकिन वे तो अपने व्यापार के सिलसिले में शहर से बाहर गए हुए हैं," समिति के एक अन्य सदस्य ने बताया।

"तो ठीक है, तय रहा कि जैसे ही बिल्लू के पिता जी वापस आएँगे, हम सब मिलकर उनके पास बिल्लू की शिकायतें लेकर जाएँगे।" चोपड़ा जी ने फ़ैसला सुनाते हुए कहा।

उधर, इस फ़ैसले से बेख़बर

बिल्लू अपने शिकार के इंतज़ार में काफ़ी देर से छत पर बैठा बोर हो रहा था। दोपहर का समय था, इसलिए गली सुनसान पड़ी हुई थी। अचानक बिल्लू की आँखें शरारत से चमक उठीं।

सामने से एक डाकिया अपनी मस्ती में साइकिल चलाता हुआ चला आ रहा था। संयोग की बात थी कि उसने साइकिल भी ठीक बिल्लू के दरवाज़े के आगे ही रोकी। बिल्लू को तो जैसे इसी मौक़े का इंतज़ार था। उसने बिना कोई समय गँवाए पास रखी रंग भरी बाल्टी डाकिए के ऊपर उड़ेल दी।

"बुरा न मानो होली है..." ठहाका लगाते हुए बिल्लू छत से भागकर नीचे चला गया। उधर डाकिया भी ग़ुस्से से बड़बड़ाता हुआ चला गया। उसके हाथ की सारी चिट्ठियाँ पूरी तरह से भीग गई थीं और गिरकर बिखर गई थीं। उन पर लिखा हुआ एक-एक शब्द धुल चुका था।

अगले दिन बिल्लू ने इस घटना को अपने सारे दोस्तों को खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया। दो दिन बाद एक कार बिल्लू के घर के आगे आकर रुकी और उसमें से एक सज्जन निकलकर तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़े। उनके चेहरे पर चिंता के भाव साफ़ नज़र आ रहे थे। उन्होंने दरवाज़े पर दस्तक दी तो बिल्लू की माँ ने आकर दरवाज़ा खोला।

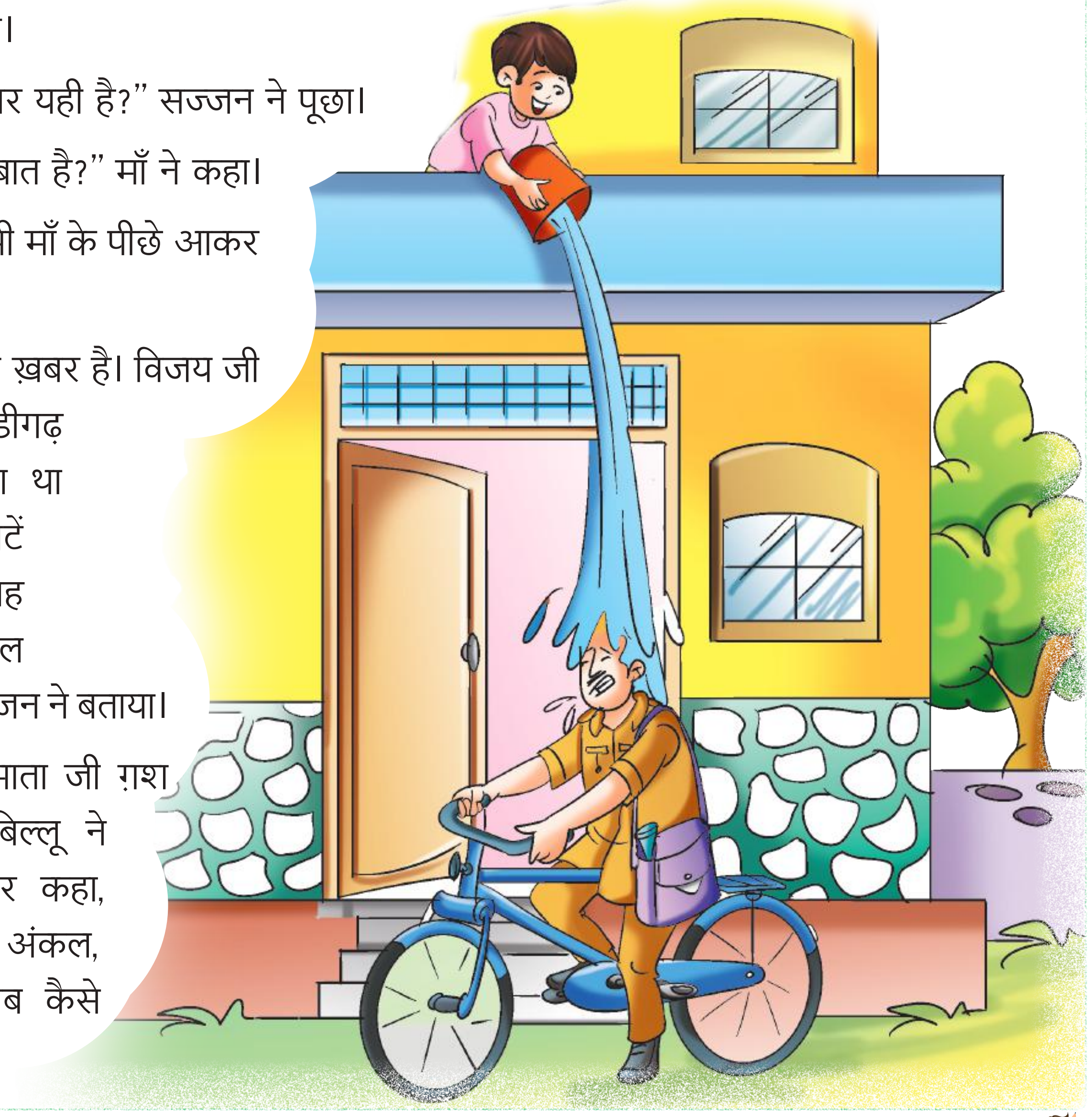

"क्या विजय जी का घर यही है?" सज्जन ने पूछा।

"जी हाँ, कहिए, क्या बात है?" माँ ने कहा।

उत्सुकतावश बिल्लू भी माँ के पीछे आकर खड़ा हो गया था।

"आपके लिए एक बुरी ख़बर है। विजय जी का चार दिन पहले चंडीगढ़ में एक्सीडेंट हो गया था और उन्हें गंभीर चोटें आई हैं। फ़िलहाल वह अस्पताल में दाख़िल किए गए हैं।" उस सज्जन ने बताया।

सुनते ही बिल्लू की माता जी ग़श खाकर गिर पड़ीं। बिल्लू ने तेज़ी से आगे आकर कहा, "लेकिन आप कौन हैं अंकल, और आपको यह सब कैसे पता?"

सज्जन ने कहा, "बेटे, तुम्हारे पिता जी व्यापार के सिलसिले में मुझसे ही मिलने आए थे। उनकी दुर्घटना के तुरंत बाद मैंने तुम्हारे घर टेलीग्राम भी भेजा था, लेकिन जब तीन दिन तक कोई नहीं पहुँचा, तो आज मुझे खुद आना पड़ा।"

बिल्लू की आँखों के सामने तत्काल वह दृश्य घूम गया, जब उसने डाकिए के ऊपर रंगवाला पानी डालकर सारी चिट्ठियाँ खराब कर डाली थीं। बरबस ही उसकी आँखों में आँसू छलक आए और पछतावे व ग्लानि से उसका मन भर आया।

उसी समय बिल्लू व उसके परिवार के लोग चंडीगढ़ के लिए रवाना हो गए। कुछ दिन बाद जब सब लोग वापस लौटे तो मोहल्लेवालों ने बिल्लू में एक बदलाव देखा। चालाक और शैतान बिल्लू अब एक गंभीर, समझदार बच्चा बन चुका था और सबकी सहायता करने को हमेशा तत्पर रहता था।

शब्द-अर्थ

नौ-दो ग्यारह होना — भाग जाना *(run away)*, समिति — संस्था *(association)*, सहमति — रज़ामंदी *(agree)*, वरिष्ठ — सबसे बड़ा *(elder)*, बरबस — अपने आप ही *(himself / herself)*, ग्लानि — शर्म *(shy)*, रवाना हो गए — चले गए *(left)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए—

पिचकारी	मोहल्ला	व्यापार	समिति	ठहाका
उत्सुकतावश	दुर्घटना	ग्लानि	शैतान	तत्पर

2. बताओ, क्या पढ़ा—

(क) होली आते ही बिल्लू को क्या याद आता था?

(ख) दीनू काका ने बिल्लू की शिकायत किससे की?

(ग) बिल्लू के पिता जी कहाँ गए हुए थे?

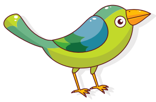

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए—

(क) दीनू काका हाथ में लिये चल रहे थे—

☐ बंदूक ☐ लाठी ☐ खरबूजा

☐ छड़ी

(ख) दीनू काका को दर्द था–

- [ ] कमर में
- [ ] सिर में
- [ ] हाथ में
- [ ] सभी में

(ग) रामनाथ जी के लड़के की आँख सूजने का कारण था–

- [ ] फुंसी निकलना
- [ ] मिर्च के हाथ लगना
- [ ] किसी कीट का आँख में गिर जाना
- [ ] बिल्लू द्वारा गुब्बारा मारना

2. पाठांश पढ़कर वाक्य पूरे करो–

डाकिया अपनी मस्ती में साइकिल चलाता हुआ चला आ रहा था। संयोग की बात थी कि उसने साइकिल भी ठीक बिल्लू के दरवाज़े के आगे ही रोकी। बिल्लू को तो जैसे इसी मौक़े का इंतज़ार था। उसने बिना कोई समय गँवाए पास रखी रंग भरी बाल्टी डाकिए के ऊपर उड़ेल दी।

(क) डाकिया अपनी मस्ती में .... आ रहा था।

(ख) साइकिल बिल्लू के दरवाज़े .... रोकी।

(ग) बिल्लू को इसी मौक़े का .... था।

(घ) बिल्लू ने रंग भरी बाल्टी .... दी।

3. कम शब्दों में–

(क) चोपड़ा जी कौन थे? ....

(ख) समिति के वरिष्ठ सदस्य कौन थे? ....

(ग) बिल्लू के पिता जी का क्या नाम था? ....

(घ) बिल्लू की माँ ग़श खाकर क्यों गिर गई? ....

(ङ) बिल्लू के पिताजी का एक्सीडेंट कहाँ हुआ था? ....

4. अधिकतम शब्दों में–

(क) दीनू काका ने मोहल्ला सुधार समिति से किसकी और क्या शिकायत की?

....

(ख) रामनाथ जी बिल्लू से क्यों नाराज़ थे?

....

(ग) वह घटना लिखो जो बिल्लू ने अपने दोस्तों को सुनाई?

....

(घ) बिल्लू के घर टेलीग्राम क्यों नहीं पहुँचा?

....

(ङ) बिल्लू व उसके परिवार के लोग चंडीगढ़ क्यों गए?

....

भाषा-ज्ञान

1. वचन का अर्थ है–संख्या। जिस संज्ञा शब्द से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं। जैसे–लड़का (एकवचन), लड़के (बहुवचन)।

रंगीन छपे शब्दों के वचन लिखो–

(क) चिट्ठियाँ पूरी तरह से भीग गई थीं। ....

(ख) उसने मेरे बेटे की आँख पर गुब्बारा फेंककर मारा था। ....

(ग) माता जी ग़श खाकर गिर गईं। ....

(घ) आँखों के सामने तत्काल वह दृश्य घूम गया। ....

(ङ) माँ ने आकर दरवाज़ा खोला। ....

क्रियात्मक गतिविधि

- इन त्योहारों में लोग क्या-क्या करते हैं? लिखो–

रक्षाबंधन – ....

....

....

क्रिसमस – ....

....

....

ईद – ....

....

....

लोहड़ी – ....

....

....